पेन्टाटयूक

अध्याय 5

एक सही दिशा

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना...1
साहित्यिक संरचना...1
छुटकारे का जल प्रलय...2
प्रारंभिक वाचा...2
चिरस्थायी वाचा...3
जल से बचाया जाना...3
सूखी भूमि पर बाहर आना...3
परमेश्वर द्वारा सुधि लिया जाना...4
नई व्यवस्था...4
नूह के पुत्र...4
बाबुल की पराजय...5
वास्तविक अर्थ...6
छुटकारे का जल प्रलय...6
संबंध...7
निहितार्थ...8
नूह के पुत्र...8
कनान...8
संघर्ष...9
निहितार्थ...10
बाबुल की पराजय...10
नगर...11
जीत...11
निहितार्थ...12
वर्तमान प्रासंगिकता...13
आरम्भ...14
वाचा...14
जीत...14
निरंतरता...15
बपतिस्मा...15
आत्मिक युद्ध...16
परिपूर्णता...17

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अंतिम प्रलय 17
अंतिम युद्ध.. 18
उपसंहार.. 19

पेन्टाट्यूक
अध्याय पाँच
एक सही दिशा

प्रस्तावना

मुझे उस समय की एक बात याद है जब मैं यूक्रेन में पढ़ाता था, और एक दिन मेट्रो से मुझे अपनी मंजिल तक पहुँचना था जिसमें कुछ ही समय शेष था। मैं जल्दी से स्टेशन पहुँचा, सीढियों से भागता हुआ नीचे उतरा और जैसे ही ट्रेन के दरवाजे बंद हो रहे थे, ट्रेन में कूद गया। इस यात्रा में मुझे पूरे शहर को पार करना था, इसलिए मैं आराम से बैठ गया और कुछ मिनटों तक विश्राम किया। फिर कुछ समय बाद मुझे कुछ एहसास हुआ कि मैं उस ट्रेन में बैठ गया था जो गलत दिशा की ओर जा रही थी, अब स्वाभाविक रूप से, अगला मेट्रो स्टेशन मीलों दूर था, और उस तक पहुँचने में बहुत ज्यादा समय लग गया। जब तक मैं मुड़ कर वापस आया और फिर से यात्रा शुरू की, यह स्पष्ट हो चुका था कि मुझे बहुत देर होने वाली थी। मुझे याद है कि मैं अपने मन में यह सोच रहा था, "ठीक है, यह स्थिति वैसी नहीं है जैसे मैंने आशा की थी, परन्तु कम से कम अब तो मैं सही दिशा में जा रहा हूँ।

मुझे लगता है कि हमारे जीवन के अधिकांश क्षेत्रों में ऐसा ही होता है। हमारी परिस्थितियाँ हर समय सही नहीं होती हैं, और अधिकांश वे सही के करीब भी नहीं होती हैं। हम जहाँ कहीं भी जाते हैं, कई समस्याओं और चुनौतियों का सामना करते हैं। फिर भी, हम सब जानते हैं कि कम से कम गलत दिशा में जाने की अपेक्षा, सही दिशा में जाना ही बेहतर है।

हमने इस अध्याय का शीर्षक "सही दिशा" रखा है, और इसमें हम उत्पत्ति 6:9-11:9 की खोज करने जा रहे हैं, जहाँ हम उस दिशा का पता लगाएँगे जिसकी स्थापना परमेश्वर ने नूह के दिनों के जल प्रलय के बाद अपने लोगों के अनुसरण के लिए की थी। जैसा कि हम देखेंगे, अति-प्राचीन इतिहास के इन अध्यायों में मूसा ने इस्राएल के लोगों को अनुसरण करने के लिए एक स्पष्ट दिशा दी थी। हो सकता है इसमें वह सब कुछ न हो जो वे चाहते थे, परन्तु यह परमेश्वर के द्वारा ठहराई गई थी ताकि वे महान आशीषों को प्राप्त कर सकें। और अति-प्राचीन इतिहास का यह भाग मसीहियों के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि हमें भी इसी दिशा का अनुसरण करना चाहिए।

हमने इस अध्याय का शीर्षक "सही दिशा" रखा है, और इसमें हम उत्पत्ति 6:9-11:9 की खोज करने जा रहे हैं, जहाँ हम उस दिशा का पता लगाएँगे जिसकी स्थापना परमेश्वर ने नूह के दिनों के जल प्रलय के बाद अपने लोगों के अनुसरण के लिए की थी। जैसा कि हम देखेंगे, अति-प्राचीन इतिहास के इन अध्यायों में मूसा ने इस्राएल के लोगों को अनुसरण करने के लिए एक स्पष्ट दिशा दी थी। हो सकता है इसमें वह सब कुछ न हो जो वे चाहते थे, परन्तु यह परमेश्वर के द्वारा ठहराई गई थी ताकि वे महान आशीषों को प्राप्त कर सकें। और अति-प्राचीन इतिहास का यह भाग मसीहियों के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि हमें भी इसी दिशा का अनुसरण करना चाहिए।

साहित्यिक संरचना

उत्पत्ति 6:9-11:9 अति-प्राचीन इतिहास का एक बड़ा हिस्सा है, और कई विभिन्न तरीकों से इसकी रूपरेखा बनाई जा सकती है। अपने उद्देश्यों के लिए, हमने इन अध्यायों को दो मुख्य भागों में विभाजित किया है। पहले भाग में 6:9-9:17 शामिल है, और हमने इसका शीर्षक रखा है, "छुटकारे का जल प्रलय।" उत्पत्ति के इस भाग में, मूसा ने नूह के दिनों में आये जल प्रलय का वर्णन किया है। उत्पत्ति

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

9:18-11:9 इस इतिहास का दूसरा हिस्सा है, जिसका शीर्षक हमने “एक नई व्यवस्था” रखा है। यह जल प्रलय के बाद हुई कई महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन करती है, साथ ही साथ उसकी चर्चा करती है जिसने उन स्थायी स्वरूपों को निर्धारित किया जिन्होंने जल प्रलय के बाद आये संसार को चित्रित किया था। इन अध्यायों के साहित्यिक स्वरूपों की बेहतर समझ प्राप्त करने के लिए, हम इन दोनों प्रमुख भागों को देखेंगे। आइए नूह के दिनों में आये जल प्रलय के विषय में मूसा द्वारा लिखित कहानी की संरचना की जाँच करने के द्वारा शुरु करते हैं।

छुटकारे का जल प्रलय

हाल के वर्षों में कई टीकाकारों ने ध्यान दिया है कि नूह के जल प्रलय की कहानी अपेक्षाकृत एक स्पष्ट साहित्यिक स्वरूप को दर्शाती है। यद्यपि इस स्वरूप का कई प्रकार से वर्णन करना संभव है,लेकिन इस अध्ययन में हम बताएंगे कि कैसे यह अध्याय एक पाँच चरणों के घटनाचक्र को बनाते हैं जो एक सामान है।

प्रारंभिक वाचा

इस कहानी का पहला चरण उत्पत्ति 6:9-22 में प्रकट होता है, और हम इसे नूह के साथ “प्रारंभिक ईश्वरीय वाचा” कहेंगे । कहानी के इस भाग में, मूसा ने लिखा कि पाप से भरे संसार के बीच, नूह ही अकेला धर्मी व्यक्ति था। परमेश्वर ने नूह से बातें की और उसे बताया कि उसने क्यों मानव जाति को नष्ट करने की योजना बनाई है । उत्पत्ति 6:13 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> तब परमेश्वर ने नूह से कहा, “सब प्राणियों के अन्त करने का प्रश्न मेरे सामने आ गया है; क्योंकि उनके कारण पृथ्वी उपद्रव से भर गई है, इसलिये मैं उनको पृथ्वी समेत नष्ट कर डालूँगा।” (उत्पत्ति 6:13)

फिर भी, इस कहानी का पहला चरण हमें यह भी बताता है कि परमेश्वर ने एक मनुष्य, अर्थात, धर्मी नूह और उसके परिवार को बचाने के द्वारा फिर से एक नई शुरुआत करने की भी योजना बनाई थी। अपनी योजना के द्वारा नूह को आश्वस्त करने के लिए, परमेश्वर ने नूह के साथ प्रारंभिक वाचा बाँधी। उत्पत्ति 6:17-18 में, हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने नूह से इन वचनों को कहा था:

> और सब जो पृथ्वी पर हैं मर जाएँगे। परन्तु तेरे संग मैं वाचा बाँधता हूँ; इसलिये तू अपने पुत्रों, स्त्री, और बहुओं समेत---जहाज में प्रवेश करना। (उत्पत्ति 6:17-18)

जल प्रलय की कहानी की शुरुआत में, परमेश्वर ने आने वाले जल प्रलय से नूह और उसके परिवार को बचाने के लिए एक वाचा बाँधी। इस वाचा ने नूह के बचाए जाने को सुनिश्चित किया और जल प्रलय के बाद उसे नई मानवजाति के मुखिया के रूप में स्थापित किया।

अब जब कि हम देख चुके हैं कि किस तरह नूह के साथ प्रारंभिक वाचा पर ध्यान-केन्द्रित करने साथ जल प्रलय की कहानी की शुरुआत होती है, हमें अब कहानी के अंतिम भाग 8:20- 9:17, की ओर बढ़ना चाहिए जो पहली कहानी को संतुलित करती है, इसका शीर्षक हमने रखा है, नूह के साथ “चिरस्थायी ईश्वरीय वाचा।”

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

चिरस्थायी वाचा

जैसा कि हमारे शीर्षक से पता चलता है, इन पदों में जल प्रलय के बाद परमेश्वर नूह के पास लौटकर आता है और उसके साथ एक दूसरी वाचा बाँधता है। परमेश्वर ने संसार में मानवता को एक नई व्यवस्था के साथ एक और मौका देने का फैसला किया। जैसा कि हम उत्पत्ति 8:22 में पढ़ते हैं:

> अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने के समय, ठण्ड और तपन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात, निरन्तर होते चले जाएँगे। (उत्पत्ति 8:22)

इस नई व्यवस्था की निश्चितता को स्थापित करने के लिए, उत्पत्ति 9:11-15 में जल प्रलय की कहानी के अंत में परमेश्वर ने नूह के साथ एक दूसरी वाचा बाँधी।

> और मैं तुम्हारे साथ अपनी यह वाचा बाँधता हूँ कि सब प्राणी फिर जल-प्रलय से नष्ट न होंगे : और पृथ्वी का नाश करने के लिये फिर जल-प्रलय न होगा... मैं ने बादल में अपना धनुष रखा है, वह मेरे और पृथ्वी के बीच में वाचा का चिह्न होगा। और जब मैं पृथ्वी पर बादल फैलाऊँ तब बादल में धनुष दिखाई देगा। तब मेरी जो वाचा तुम्हारे और सब जीवित शरीरधारी प्राणियों के साथ बन्धी है; उसको मैं स्मरण करूँगा, (उत्पत्ति 9:11-15)

इस तरह हम देखते हैं कि नूह की जल प्रलय की कहानी का अंत,परमेश्वर प्रतिज्ञा कि जल फिर कभी पृथ्वी को नाश नहीं करेगा, और वह एक निश्चित चिन्ह के रूप में वह बादलों पर एक धनुष को स्थापित करेगा तथा वह अपनी वाचा को कभी नहीं भूलेगा, के साथ होता है। यह अंतिम वाचा अति-प्राचीन इतिहास में नूह के बड़े महत्व की ओर इशारा करती है। वह इस वाचा का मध्यस्थ था, ऐसी वाचा जो भविष्य की सभी पीढ़ियों तक फैली थी।

इस कहानी के आरम्भ और अंत के भागों को ध्यान में रखकर, अब हम जल प्रलय की कहानी के आंतरिक बनावट की जाँच करने की ओर बढ़ेंगे। परमेश्वर की प्रारंभिक वाचा से शुरू करते हुए कहानी का मध्य भाग तीन प्रमुख चरणों में विभाजित होता है और अंतिम नई व्यवस्था की ओर जाता है।

जल से बचाया जाना

इस कहानी का दूसरा चरण 7:1-16 में प्रकट होता है, जिसका शीर्षक हमने रखा है “जल से बचाया जाना।” यह अपेक्षाकृत स्पष्ट और सीधा है। नूह ने जहाज को तैयार किया और हर प्रकार के जानवरों को उसके अंदर एकत्रित किया, और प्रलय का जल पृथ्वी पर भरने लगा, लेकिन नूह, उसका परिवार, और जिन जानवरों को उसने इकट्ठा किया था वे जहाज में सुरक्षित कर दिए गए थे।

सूखी भूमि पर बाहर आना

नूह के जल प्रलय की कहानी का चौथा भाग दूसरे चरण में एक नाटकीय विरोधाभास को दर्शाता है। यह उत्पत्ति 8:6-19 में सूखी भूमि पर नूह के बाहर निकलने का वर्णन करता है। जब जल कम होने लगा, नूह सूखी भूमि को देखने के लिए उत्सुक था ताकि वह जहाज से बाहर निकल सके। कुछ समय तक प्रतीक्षा करने के बाद, सूखी भूमि दिखाई देती है और परमेश्वर ने जिस तरह से नूह को पहले जहाज के अंदर जाने की आज्ञा दी थी, अब जहाज छोड़ने की आज्ञा दी।

परमेश्वर द्वारा सुधि लिया जाना

अब हम इस कहानी के केंद्र, या एक नए मोड़, उत्पत्ति 7:17-8:5, को देखने के लिए तैयार है, जिसका शीर्षक हमने रखा है नूह का "परमेश्वर द्वारा सुधि लिया जाना।" यह पद पृथ्वी पर जल प्रलय के उग्र होने और सभी जीवित प्राणियों के नाश किये जाने के वर्णन के साथ शुरु होता हैं। लेकिन इस भाग के अंत तक, जल घटने लगा है।

अब, इस भाग के एकदम बीचोबीच एक साधारण लेकिन गहन वाक्य है जो बताता है कि क्यों परमेश्वर ने उग्र जल प्रलय को शांत करना शुरु किया। उत्पत्ति 8:1 में मूसा ने लिखा कि तूफान के बीच में:

> परन्तु परमेश्वर ने नूह और जितने बनैले पशु और घरेलू पशु उसके संग जहाज में थे, उन सभों की सुधि ली : और परमेश्वर ने पृथ्वी पर पवन बहाई, और जल घटने लगा; (उत्पत्ति 8:1)

अपनी बड़ी दया के कारण, परमेश्वर उस वाचा को नहीं भूला था जो उसने नूह और जो उसके साथ थे उनके साथ बाँधी थी। उसने जहाज के यात्रियों की सुधि ली, और नूह के हित में कार्य करते हुए उस उग्र प्रलय को शांत किया।

नूह के जल प्रलय की यह रूपरेखा, कहानी के मूल उद्देश्यों को प्रकाशित करती है। मूसा ने छुटकारे की कहानी के रूप में जल प्रलय के बारे में लिखा था। हालांकि पृथ्वी के दुष्ट लोगों पर दण्ड आया, लेकिन मूसा का प्रमुख उद्देश्य यह दिखाना था कि नूह के द्वारा परमेश्वर ने संसार को अत्यधिक आशीषित भी किया।

अब जबकि हमने उत्पत्ति 6:9-11:9 के पहले भाग की जाँच कर ली है, तो हमें उत्पत्ति 9:18-11:9 में, दूसरे मुख्य भाग, एक नई व्यवस्था की ओर बढ़ना चाहिए।

नई व्यवस्था

अध्याय 9-11 में नई व्यवस्था के विषय मूसा का वर्णन दो मूल इकाइयों में विभाजित होता है। एक ओर, उत्पत्ति 9:18-10:32 नूह के पुत्रों पर केंद्रित है। दूसरी ओर, उत्पत्ति 11:1-9 बाबुल नगर की पराजय को बताता है। हालांकि पहली नजर में इन अध्यायों के मध्य कोई सम्बन्ध नज़र नहीं आता, लेकिन हम देखेंगे कि वास्तव में वे मिलकर संसार की नई व्यवस्था के लिए एक स्वरूप का निर्माण करते हैं। वे उस समय से संसार के इतिहास की प्रमुख विशेषताओं को स्थापित करते आ रहे है। आइए नूह के पुत्रों की कहानी और नए व्यवस्थित संसारकी स्थापना में उसके द्वारा दिए गए योगदान पर पहले नज़र डालते हैं।

नूह के पुत्र

उत्पत्ति के 9-10 अध्यायों में, नूह के पुत्रों के बारे में लिखे अपने वृत्तांत में मूसा ने एक शीर्षक और दो प्रमुख भाग शामिल किये हैं। 9:18-19 में हम एक शीर्षक को पाते हैं जो दर्शाता है कि उत्पत्ति का यह भाग मुख्य रूप से नूह के तीन पुत्रों और वे किस तरह पृथ्वी के ऊपर फैले, इस बात पर ध्यान-केंद्रित करता है।

इस शीर्षक के मुताबिक, नूह के पुत्रों पर लिखा मूसा का वृत्तांत दो भागों में विभाजित होता है। पहले स्थान पर, हम उत्पत्ति 9:20-29 में वर्णित कहानी पुत्रों के बीच अंतरों को निर्धारित करती है। और दूसरे स्थान पर, 10:1-32 में नूह के पुत्रों और उसके वंशजों के फैलने का वर्णन करती है। इन भागों को अलग से देखना उपयोगी होगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अध्याय 9:20-29 वह प्रसिद्ध वचन पाया जाता है जो हाम के पुत्र कनान पर अभिशाप दिए जाने के विषय में बताता है। उत्पत्ति 9:24-27 में मूसा ने जो लिखा उसे सुनिए:

> जब नूह का नशा उतर गया, तब उसने जान लिया कि उसके छोटे पुत्र ने उसके साथ क्या किया है। इसलिये उसने कहा, "कनान शापित हो!" ... फिर उसने कहा, "शेम का परमेश्वर यहोवा धन्य है! ... परमेश्वर येपेत के वंश को फैलाए" (उत्पत्ति 9:24-27)

साधारण शब्दों में कहें तो, यह कहानी उन घटनाओं के बारे में है जो नूह के वंशजों में एक महत्वपूर्ण अंतर को उजागर करती है । नूह ने हाम के पुत्र, कनान को श्राप दिया। कनान अपने भाईयों के दासों का दास होगा। फिर भी, नूह ने अपने दूसरे पुत्रों शेम और येपेत पर आशीष की घोषणा की, क्योंकि उन्होंने आदर के साथ उससे बर्ताव किया था।

मूसा ने जल प्रलय के बाद नई व्यवस्था का विवरण करते हुए इस कहानी को शामिल किया क्योंकि संपूर्ण मानव जाति नूह के तीन पुत्रों से पैदा हुई है। यहाँ किए गए अंतरों ने बाइबल इतिहास में इस समय से लेकर आगे तक देखे गए मानवीय संबंधों की गतिशीलताओं को जन्म दिया था।

नूह के पुत्रों के बीच अंतर किये जाने के दृष्टिकोण को अध्याय 10 द्वारा प्रमाणित किया गया है : नूह के पुत्रों का फैलाव। उत्पत्ति 10 में, नूह के दिनों के बहुत बाद में आई पीढ़ियों को देख कर, मूसा ने उन स्थानों की सूची का एक नमूना दिया जहाँ हाम, शेम और येपेत के वंशज पृथ्वी भर में गए थे। उत्पत्ति 10 के अनुसार, येपेतवंशी कनान के उत्तर, उत्तर-पूर्व, और उत्तर-पश्चिम के क्षेत्रों में बस गए थे। कुछ को छोड़ कर हामवंशी उत्तरी अफ्रीका की ओर चले गए, और हाम का विशेष पुत्र, जिसका नाम कनान था, वह कनान देश में बस गया था, वही देश जिसे इस्राएल को देने की प्रतिज्ञा की गयी थी। शेमवंशी या सेमिटिक लोग बहुत कुछ अरब प्रायद्वीप के क्षेत्रों पर बस गए थे।

उत्पत्ति 10 अध्याय अत्यधिक चयनात्मक है और प्रवास के सामान्य स्वरूपों को प्रदान करने के लिए रूपांकित किया गया था। लेकिन मूसा के लिए ये सामान्य स्वरूप कुछ दीर्घकालिक स्वरूपों को चित्रित करने के लिए पर्याप्त थे जो जल प्रलय के बाद नई व्यवस्था में मानवीय पारस्परिक क्रिया को दिखाते थे।

अब जबकि हमने उत्पत्ति 9-10 में नूह के पुत्रों पर मूसा के लिखित वृत्तांत की साहित्यिक संरचना को देख लिया है, हम जल प्रलय के बाद आई नई व्यवस्था के दूसरे भाग को देखने के लिए तैयार हैं: 11:1-9 में बाबुल नगर की पराजय।

बाबुल की पराजय

बाबुल का गुम्मट या मीनार की कहानी पाँच एक जैसे नाटकीय चरणों में विभाजित होती है। पद 1 और 2 का पहला चरण वहां से शुरू होता है जहाँ हम सारे मनुष्यों को एक साथ एक समूह में रहते हुए पाते है। लेकिन इसके विपरीत, इस कहानी का अंत पद 8 और 9 में होता है जहाँ हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने मानवीय भाषा में गड़बड़ी डाली और मनुष्यों को पृथ्वी भर में फैला दिया था। कैसे समस्त मानव जाति जो एक भाषा के साथ आगे बढ़ती जा रही थी, अब अचानक कई भाषाओं के होने से बिखर गई? इसका मध्य भाग हमें बताता है कि आखिर हुआ क्या।

पद 3 और 4 का दूसरा चरण लोगों की एक योजना को बताता है। उन्होंने एक शहर का निर्माण करने का इरादा किया जिसकी मीनार या गुम्मट इतनी ऊँची हो जो स्वर्ग से बातें करे, ताकि वे सदा के लिए प्रसिद्ध और पूरी तरह से अजेय हो सकें। फिर भी, कहानी का चौथा चरण जो पद 6 और 7 में पाया जाता है, परमेश्वर की अन्य योजना को बताता है जो मनुष्यों की इस योजना को संतुलित करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परमेश्वर ने लोगों की भाषा में गड़बड़ी डाला और उन पर हमला करने के लिए अपनी स्वर्गीय सेना को बुलाया और इस प्रकार उसने नगर और उसकी मीनार के निर्माण को रोका।

इस कहानी का निर्णायक पल पद 5 में दिखाई देता है, जहाँ परमेश्वर ने नगर और उसकी मीनार की परख की। जैसे ही परमेश्वर ने नगर व उसके घमंडी निवासियों की योजना को देखा, उसने बाबुल नगर को समाप्त करने का दृढ़ संकल्प किया।

तो हम देखते हैं कि मूसा के अनुसार, जल प्रलय के बाद जीवन उस स्वर्गलोक से कोसो दूर था जिसकी हमने अपेक्षा की गयी थी। इसके विपरीत, नूह के पुत्रों की कहानी दिखाती है कि नई व्यवस्था में मनुष्य जाति के विभिन्न समूहों के बीच जटिल संपर्क शामिल हैं। इसमें परमेश्वर के खिलाफ अधिक विद्रोह नज़र आता है, साथ में यह भी देख सकते है कि परमेश्वर द्वारा उन लोगों को आखिरकार हराया जाता है जो उसकी अवज्ञा करते हैं। भले ही नई व्यवस्था की ये संरचनाएं हमारे आधुनिक कानों को अजीब लगे, लेकिन हम देखेंगे कि वे इस्राएलियों के अनुभवों से स्पष्ट रीति से बातें करते हैं जिनके लिए मूसा ने इन अध्यायों को लिखा था।

अब जबकि हमने उत्पत्ति 6:9-11:9 की साहित्यिक संरचना को देख लिया है, हम अब दूसरा प्रश्न पूछ सकते है : मूसा ने जल प्रलय और उसके परिणामस्वरूप नई व्यवस्था की कहानी को क्यों लिखा था? वह इस्राएलियों को,जब वे उसके पीछे प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर जा रहे थे तो क्या शिक्षा दे रहा था?

वास्तविक अर्थ

कहने की जरूरत नहीं, पर यह सुनिश्चित हैं कि मूसा ने नूह के जल प्रलय और नई व्यवस्था के बारे में लिखा ताकि अति प्राचीन इतिहास के इस काल के तथ्यों के बारे में औरों को सूचित किया जा सके। फिर भी, उसका लेख बहुत ही चयनात्मक और विशेष विषयों के प्रति यह सोचने के लिए उन्मुख है कि उसके दिमाग में यही सब कुछ था। मूसा ने न केवल अतीत को बताने के लिए लिखा, लेकिन अपने दिनों में इस्राएल को मार्गदर्शन देने के लिए भी लिखा था।

उत्पत्ति 6:9-11:9 के तीन भागों को देखने के द्वारा हम मूसा के उद्देश्य को प्रकट करेंगे: सबसे पहले, हम जल प्रलय की कहानी के वास्तविक अर्थ का पता लगाएंगे ; और उसके बाद हम नूह के पुत्रों के विषय मूसा के लिखित वर्णन को देखेंगे; और अंत में, हम अति प्राचीन इतिहास के अंतिम भाग के वास्तविक निहितार्थों पर ध्यान देंगे — यानी बाबुल की पराजय। आइए सबसे पहले देखते है कि किस प्रकार से मूसा ने नूह के जल प्रलय को अपने दिनों के इस्राएलियों के अनुभव के साथ जोड़ा।

छुटकारे का जल प्रलय

जल प्रलय की कहानी का उपयोग मूसा ने कैसे किया इस बात को समझने के लिए, हम कहानी के दो पहलुओं को देखेंगे: सबसे पहले, उन संबंधों को जो उसने जल प्रलय और निर्गमन के बीच स्थापित किए थे; और दूसरा, इस्राएल के लिए इन संबंधों के निहितार्थों क्या है। मूसा के जीवन और सेवा से जो बातें मेल खाती थीं उसने उन्ही तरीको से नूह को चित्रित किया और ऐसा करने के द्वारा उसने जल प्रलय और अपने दिनों के बीच के सम्बन्ध को स्थापित किया। अब, इस बात में कोई दो राय नहीं है, कि नूह और मूसा के जीवन कई विभिन्नताएं थी, और इन भिन्नताओं को नजरंदाज नहीं किया जाना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

लेकिन, यह भी स्पष्ट है कि मूसा ने उद्देश्यपूर्ण रीति से नूह को चित्रित किया ताकि उसके इस्राएली पाठक नूह को मूसा के पूर्ववर्ती या उससे पहले आने वाले के रूप में देख सकें।

संबंध

नूह और मूसा के बीच कम से कम आठ महत्वपूर्ण संबंध हैं। पहले स्थान पर, हिंसा के रूपांकन के द्वारा उसने अपने और नूह के बीच संबंध होने को दर्शाया। उत्पत्ति 6:13 में आपको याद होगा कि नूह के दिनों में जल प्रलय इसलिए आया क्योंकि पृथ्वी हिंसा से भर गई थी। जैसा कि निर्गमन 1-2 स्पष्ट करता है, मूसा की बुलाहट से पहले मिस्री लोगों ने इस्राएल के लोगों पर बहुत हिंसा की थी। मूसा के द्वारा इस्रालियों के लिए छुटकारे का आना, मिस्रियों द्वारा उन पर की गयी हिंसा का जवाब था। इसलिए, नूह और मूसा दोनों का कार्य हिंसा से छुटकारा देने के लिए था।

दूसरा संबंध मूसा द्वारा प्रयोग किए गए “संदूक” शब्द में प्रकट होता है। नूह के जहाज के लिए पूरे उत्पत्ति 6-9 में इब्रानी शब्द तेवाह (תֵּבָה) इस्तेमाल किया गया है। दिलचस्प बात यह है कि,पूरे निर्गमन में अध्याय 2:3,5 वह एकमात्र स्थान है जहाँ मूसा ने तेवाह शब्द का प्रयोग किया। वहाँ उसने उस टोकरी के रूप में एक संदूक, या तेवाह, का हवाला दिया था जिसमें उसकी माँ ने उसे रखा था। यद्यपि नूह का संदूक (जहाज) विशाल था, जबकि मूसा का संदूक बहुत छोटा था, मूसा ने इस तथ्य की ओर इशारा किया कि उसे और नूह दोनों को संदूक, या तेवाह के माध्यम से पानी में डूबने से बचाया गया था।

तीसरे स्थान पर, ईश्वरीय वाचाओं की महत्वता भी नूह को मूसा के अग्रदूत के रूप स्थापित करती है। जैसा कि हमने देखा, उत्पत्ति 6:18 और 9:11-17 के अनुसार, नूह ने समस्त मानव जाति की ओर से परमेश्वर के साथ वाचा बाँधी थी। लेकिन निश्चित रूप से, हम जानते हैं कि ईश्वरीय वाचा में मध्यस्थ करना इस्राएल के लिए मूसा की प्रमुख सेवाओं में से एक था। जैसा कि निर्गमन 19-24 बहुत अच्छी तरह से वर्णन करता है, कि जब इस्राएल के लोग सीनै पर्वत पर आये थे तो उन्होंने यहोवा के साथ विशेष वाचा बाँधने के लिए मूसा को चुना था।

जल के माध्यम से दण्ड की प्रमुख भूमिका भी दोनों पुरुषों के बीच चौथे संबंध को स्थापित करती है। उत्पत्ति 6-9 में, परमेश्वर ने नूह और उसके परिवार को उस जल प्रलय के बीच से सुरक्षित निकाला था जिसे उसने पृथ्वी के दुष्ट लोगों का नाश करने के लिए भेजा था। और ठीक इसी तरह से, जैसे निर्गमन 13-15 हमें बताता है, कि मूसा ने इस्राएलियों को लाल समुद्र के जल से होकर निकाला था, वही जल जिसने बाद में अत्याचारी मिस्र की सेना को नाश कर दिया।

पाँचवें स्थान पर, परमेश्वर ने नूह और मूसा दोनों के दिनों में जल को वापस भेजने के लिए पवन बहाई थी। जैसे कि हमने पढ़ा, उत्पत्ति 8:1 के अनुसार. परमेश्वर ने नूह के दिनों में हुए जल प्रलय को पीछे धकेलने के लिए पवन को बहाया था। इसी तरह से, निर्गमन 14:21 के अनुसार, लाल समुद्र पर, “यहोवा ने प्रचण्ड पुरवाई चला कर समुद्र को पीछे हटा दिया था।”

छठवां संबंध जानवरों पर दिए गए महत्त्व में दिखाई देता है। जैसा कि उत्पत्ति 6:19 हमें बताता है, जहाज के भीतर जानवरों को लाने की आज्ञा परमेश्वर ने नूह को दी थी। कम से कम चार मौकों पर, निर्गमन की पुस्तक उन कई जानवरों का उल्लेख करती है जिन्होंने इस्राएलियों के साथ मिस्र देश को छोड़ा था। जिस तरह से परमेश्वर ने नूह को उसके दिनों में जानवरों को इकट्ठा करने के लिए ठहराया था, उसी तरह से परमेश्वर ने यह भी ठहराया था कि मूसा को प्रतिज्ञा किए हुए देश में जानवरों को लाना चाहिए।

सातवां, परमेश्वर द्वारा सुधी लिए जाने का विषय भी नूह और मूसा को जोड़ता है। आपको याद होगा कि उत्पत्ति 8:1 में, जब नूह के दिनों में जल उग्र हो रहा था, तो परमेश्वर ने नूह के हित के लिए कार्य किया क्योंकि उसने उसकी सुधी ली। परमेश्वर ने नूह के साथ वाचा बाँधी थी कि वह उसे जल प्रलय के बीच से सुरक्षित बाहर निकालेगा, और उसने उस वाचा को स्मरण किया। बहुत कुछ इसी तरह, परमेश्वर

ने मूसा से कहा कि उसने इस्राएल को मिस्र से छुटकारा इसलिए दिया क्योंकि उसने अपनी वाचा को स्मरण किया था। निर्गमन 6:5 में परमेश्वर ने मूसा को जो बताया उसे सुनिए :

> इस्राएली जिन्हें मिस्री लोग दासत्व में रखते हैं, उनका कराहना भी सुनकर मैं ने अपनी वाचा को स्मरण किया है। (निर्गमन 6:5)

जल प्रलय और निर्गमन दोनों में परमेश्वर द्वारा स्मरण किया जाना एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

अंततः, प्रकृति को आशीषित किया जाना भी नूह और मूसा को जोड़ता है। नूह मानव जाति को नए संसार में लेकर आया जहाँ परमेश्वर ने एक स्थायी और स्थिर प्राकृतिक व्यवस्था की प्रतिज्ञा की जो मानवता को लाभ पहुंचाएगी। इसी तरह से, मूसा ने इस्राएल को बताया कि प्रतिज्ञा किए हुए देश में, बहुत कुछ इसी तरह से प्रकृति निरंतर बनी रहेगी और कुछ वैसे ही लाभकारी होगी।

नूह और मूसा के बीच दिखाई देने वाले इन संबंधों को ध्यान में रखकर, हम इस्राएल देश के लिए इन समानताओं के निहितार्थों को देख सकते हैं। मूसा ने इन संबंधों को क्यों स्थापित किया?

निहितार्थ

इस सामग्री के मूल निहितार्थों को समझने के लिए, हमें याद रखना चाहिए कि इस्राएल के लोगों ने निर्गमन और विजय प्राप्ति की मूसा की योजना का अधिकार एवं ज्ञान पर सवाल करने के द्वारा, उसके खिलाफ गंभीर रूप से विद्रोह किया था। उसकी सेवकाई के प्रति आने वाली इन चुनौतियों ने मूसा और नूह के बीच संबंधों को स्थापित करने में उसकी मदद की थी।

परमेश्वर ने भयानक अति-प्राचीन हिंसा से मानवता को छुड़ाने और बहुतायत की आशीषों से भरे नए संसार में मानव जाति को पुनः स्थापित करने के लिए छुटकारे के जल प्रलय में नूह का इस्तेमाल किया था। और बहुत कुछ इसी तरह, परमेश्वर ने मिस्र की भयानक हिंसा से इस्राएल को छुड़ाने और इस्राएल को प्रतिज्ञा किए हुए देश और एक नए संसार में लाने के लिए मूसा का चुनाव किया था। इस्राएल के लिए मूसा की योजना नूह के जल प्रलय से इतनी मिलती जुलती थी कि इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता था कि यह परमेश्वर के हाथ का कार्य था।

अब जबकि हमने छुटकारे के जल प्रलय के वास्तविक अर्थ को देख लिया है, हमें उत्पत्ति 9:18-10:32 में नूह के पुत्रों पर मूसा के दिए वृत्तांत की ओर बढ़ना चाहिए।

नूह के पुत्र

मूसा ने नूह के पुत्रों को अपने अति-प्राचीन इतिहास में क्यों शामिल किया? इन बातों को इस्राएल के सामने में लाने के पीछे उसका क्या उद्देश्य था? मूसा के अभिलेख के इस भाग की जाँच करने के लिए, हम तीन मुद्दों पर गौर करेंगे: पहला, कनान पर उसका विशेष ध्यान; दूसरा, संघर्ष का विषय; और तीसरा, इस्राएल के लिए इन मूल विषयों के निहितार्थ। सबसे पहले कनान पर मूसा द्वारा दिए गए विशेष ध्यान पर विचार करें।

कनान

आपको याद होगा कि नूह नशे की नींद से जागता है और महसूस करता है कि हाम ने उसे अपमानित किया था, और यह कि शेम और येपेत ने उसे सम्मानित किया था। अब जैसा कि नूह ने अपने दूसरे पुत्रों को आशीष दी थी, उसी तरह हाम के खिलाफ नूह का क्रोधित होना और उसे श्राप देना उचित ही नजर आयेगा। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। उत्पत्ति 9:25-27 में नूह ने जो कुछ कहा उसे सुनिए:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> "कनान शापित हो! वह अपने भाई बन्धुओं के दासों का दास हो।" फिर उसने कहा, "शेम का परमेश्वर यहोवा धन्य है, और कनान शेम का दास हो। परमेश्वर येपेत के वंश को फैलाए; और वह शेम के तम्बुओं में बसे, और कनान उसका दास हो।" (उत्पत्ति 9:25-27)

जैसा कि हम इस पद में देखते है, शेम और येपेत को उनकी धार्मिकता के लिए उचित प्रतिफल प्राप्त हुए, लेकिन हाम का यहाँ पर उल्लेख भी नहीं किया गया था। हाम के बजाय, हाम के पुत्र, कनान को , नूह का अभिशाप मिला।

जब हम सावधानीपूर्वक इस कहानी को देखते हैं, तो हम पाते हैं कि हाम अपने भाईयों की तुलना में एक अलग भूमिका निभाता है। संक्षेप में, इस तथ्य के अलावा कि हाम कनान का पिता था, उसकी महत्वता बहुत कम है। जिस तरीके से मूसा ने इस कहानी में हाम के बारे में लिखा उस पर गौर करें। 9:18 में हम पढ़ते हैं :

> नूह के पुत्र जो जहाज में से निकले, वे शेम, हाम और येपेत थे; और हाम कनान का पिता हुआ। (उत्पत्ति 9:18)

यही पहचान 9:22 में भी प्रकट होती है:

> तब कनान के पिता हाम ने अपने पिता को नंगा देखा (उत्पत्ति 9:22)

कई मायनों में, हाम इस कहानी की पृष्ठभूमि में खो जाता है और उसका पुत्र कनान, शेम और येपेत के साथ अपना स्थान बना लेता है।

कनान पर मूसा के विशेष जोर दिए जाने को ध्यान में रखकर, हम दूसरे मुद्दे की ओर बढ़ सकते हैं जो नूह के पुत्रों के विषय में उसके लेख में प्रकट होता है—जल प्रलय के बाद सृष्टि की नई व्यवस्था में संघर्ष।

संघर्ष

नूह के पुत्रों पर मूसा के लेख में, संघर्ष एक प्रमुख भूमिका अदा करता है। इस विषय को छोड़ देने का अर्थ है कहानी के सबसे महत्वपूर्ण पहलू को छोड़ देना। उत्पत्ति 9:25-27 में भी संघर्ष का विचार प्रकट होता है :

> "कनान शापित हो! वह अपने भाई बन्धुओं के दासों का दास हो।" फिर उसने कहा, "शेम का परमेश्वर यहोवा धन्य है, और कनान शेम का दास हो। कनान शापित हो : परमेश्वर येपेत के वंश को फैलाए; और वह शेम के तम्बुओं में बसे, और कनान उसका दास हो।" (उत्पत्ति 9:25-27)

ध्यान दें कि इस पद में किस तरह से कनान पर आये अभिशाप को तीन बार दोहराने के द्वारा वहां उपस्थित संघर्ष पर मूसा ने जोर दिया था। पद 25 में, उसने यह श्राप दिया कि कनान "दासों का दास" होगा, या यूँ कहें की सबसे निचले स्तर का दास। पद 26 में, नूह ने भविष्यवाणी की कि कनान शेम का दास होगा। और पद 27 में, नूह ने यह भी कहा कि कनान येपेत का भी दास बनेगा। इस पुनरावृत्ति के द्वारा, मूसा ने इस तथ्य पर जोर दिया कि कनान निश्चित रूप से अपने भाईयों के आधीन हो जायेगा।

इसके अलावा, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ये पद शेम को कनान पर मुख्य विजेता के रूप में चित्रित करते हैं। पद 27 में, इन शब्दों का कि "येपेत शेम के तम्बुओं में बसे, और कनान उसका दास हो" बेहतर अनुवाद हो सकता है, "येपेत शेम के तंबुओं में रहे ताकि कनान उसका दास हो सके।" नूह के

विचार से ऐसा लगता है कि कनान येपेत के अधीन पूरी तरह तब हो जायेगा जब येपेत शेम के साथ अपनी शक्तियाँ मिलाता है। वास्तव में, मूसा विश्वास करता था कि कनान को अधीन करने में शेम को नेतृत्व करना था।

इस तरह हम इस पद में देखते हैं कि जल प्रलय के बाद मूसा ने नई व्यवस्था में पाई जाने वाली एक महत्वपूर्ण विशेषता को स्थापित किया, जिसकी शायद ही उम्मीद की जा सकती थी। वह समझ गया था कि मानवता का भविष्य उस नाटकीय संघर्ष में बंधेगा जिसमें शेम के वंशज कनान के वंशजों को अपनी अधीनता में कर लेंगे।

कनान और संघर्ष के विषय पर मूसा के जोर दिए जाने के प्रकाश में, हम अब इस स्थिति में हैं कि प्राचीन इस्राएल में नूह के पुत्रों के मूल निहितार्थों को देख सकें।

निहितार्थ

मूसा ने अपने इतिहास में जल प्रलय के बाद आई नई व्यवस्था के अंतर्गत इन घटनाओं को क्यों शामिल किया? खैर, नई व्यवस्था का इस प्रकार से वर्णन करने में मूसा का एक बहुत ही विशेष मकसद था। शेम और कनान के बीच का संघर्ष उसके इस्राएली श्रोताओं की जरूरतों से सीधे बात करता था। इसने उनके जीवनों के एक महत्वपूर्ण आयाम की तरफ ध्यान आकर्षित किया।

मूसा के उद्देश्य को समझने की कुंजी उत्पत्ति 10:18-19 में पाई जाती है। कनान के कुछ वंशजों को सूचीबद्ध करने के बाद, मूसा ने लिखा कि :

> फिर कनानियों के कुल भी फैल गए; और कनानियों की सीमा सीदोन से लेकर गरार के मार्ग से होकर अज्जा तक और फिर सदोम और अमोरा और अदमा और सबोयीम के मार्ग से होकर लाशा तक हुआ। **(उत्पत्ति 10:18-19)**

ये विशेष भौगोलिक संदर्भ मूसा के इस्राएली पाठकों के लिए बहुत जाने पहचाने थे। कनान के वंशज, या कनानी लोग उस क्षेत्र में बस गए थे जो सीदोन से गाजा तक उत्तर से दक्षिण तक, और सदोम एवं अमोरा के क्षेत्र तक फैला था। मूसा की चिंता विशेष रूप से कनान के उन वंशजों के प्रति थी जो प्रतिज्ञा किए हुए देश में बस गए थे। परमेश्वर द्वारा बुलाए गए एक शेमवंशी देश होने के नाते, इस्राएल के लोगों को कनानी लोगों के इस देश में जाना था और उस पर अपना दावा पेश करना था।

इस तरह हम देखते हैं कि मूसा द्वारा नूह के पुत्रों का वर्णन सिर्फ अतीत का विवरण देने के लिए नहीं किया गया थी। बल्कि इसलिए भी था कि इस्राएल को विजय पाने के लिए आगे बढ़ने की जो बुलाहट मूसा को मिली थी उस बुलाहट की पृष्ठभूमि तैयार की जा सके , ठीक उसी तरह जैसे परमेश्वर ने अति-प्राचीन इतिहास में नियुक्त किया था। परिणामस्वरूप, जो इस्राएली कनान देश को लेने की मूसा की बुलाहट का विरोध कर रहे थे वे सिर्फ मूसा का ही विरोध नहीं कर रहे थे। वे वास्तव में परमेश्वर की योजना का विरोध कर रहे थे, और उस व्यवस्था का भी जिसे परमेश्वर ने संसार के लिए जल प्रलय के बाद स्थापित किया था।

अब जबकि हमने देख लिया है कि मूल इस्राएली पाठकों पर जल प्रलय और नूह के पुत्रों की कहानी किस तरह लागू होती है, तो हमें अपने तीसरे केंद्र बिंदु की ओर बढ़ना चाहिए : यानी उत्पत्ति 11:1-9 में बाबुल की पराजय के बारे में लिखते समय मूसा का मूल मकसद।

बाबुल की पराजय

यह समझने के लिए कि मूसा किस तरह से बाबुल की कहानी को इस्रायलियों के जीवन में लागु करवाना चाहता था, हमें इस पद के तीन पहलुओं को देखना होगा : सबसे पहला, नगर के विषय में दिया

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मूसा का विवरण; दूसरा, यहोवा की जीत के विषय दिया गया उसका विवरण; और तीसरा, इस्राएलियों के लिए इसका क्या निहितार्थ है विशेषकर तब जब वे प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर बढ़ते हैं। आइए पहले नगर के विवरण को देखते हैं।

नगर

हमें ध्यान देना चाहिए कि नगर का नाम, बाबुल, उस नगर के मेल खाता है जो बाद में बेबीलोन के नाम से जाना जाने लगा। मूसा के समय तक, बेबीलोन नगर प्राचीन मध्य पूर्व में बहुत प्रसिद्ध था। यह कई सालों से सभ्यता का केंद्र रहा था, और इसकी प्रतिष्ठा पौराणिक अनुपातों में बड़ गई थी। इसलिए जब मूसा ने ऐसे स्थान के बारे में लिखा जिसे जल प्रलय के बाद बाबुल कहा गया, तो उसके इस्राएली पाठकों ने तुरंत इस स्थान को प्राचीन इतिहास के आरंभिक एवं महान शहरी केंद्र के रूप में पहचाना होगा।

जीत

उत्पत्ति 11:1-9 का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू वह शैली है जिसमें मूसा ने इस महान अति-प्राचीन नगर पर यहोवा की जीत का वर्णन किया था। इस कहानी में कई बिंदुओं पर, मूसा ने अपने दृष्टिकोण के साथ बाबुल के निवासियों के दृष्टिकोणों एवं उसमें पाए जाने वाले विरोधाभास दिखाने के द्वारा परमेश्वर की जीत की भव्यता को प्रदर्शित किया। उदाहरण के लिए, जिस रीति से मूसा ने तितर-बितर होने के विषय को लिखा उस पर विचार करें, या इब्रानी में, क्रिया पुत्स (פּוּץ)। एक ओर, बाबुल के निवासी इस संभावना से बहुत चिंतित थे कि वे बिखर सकते हैं। 11:4 में हम पाते हैं कि उन्होंने नगर का निर्माण किया ताकि उन्हें "सारी पृथ्वी पर फैलना न पड़े।"

लेकिन इसके विपरीत, मूसा ने दो बार लिखा कि परमेश्वर ने ठीक वही किया जो बाबुल के लोग नहीं चाहते थे कि हो। 11:8 में हम पढ़ते हैं कि :

> इस प्रकार यहोवा ने उनको ... सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया (उत्पत्ति 11:8)।

और फिर 11:9 में हम पाते हैं कि :

> और वहीं से यहोवा ने मनुष्यों को सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया। (उत्पत्ति 11:9)

अकसर पुराने नियम में, "फैलना या बिखरना" शब्द का अर्थ युद्ध में बुरी तरह पराजित होने जैसा, बहुत ही नकारात्मक है। हारे हुए सैनिक बिखर जाते हैं क्योंकि उनके शत्रु उनका पीछा करते हैं, और जब वे भाग रहे होते हैं तो उन्हें मार डाला जाता हैं। और इस कहानी में भी यही अर्थ है। मूसा ने इस कहानी को यहोवा की एक आश्चर्यजनक जीत की कहानी के रूप में प्रस्तुत किया। यहोवा ने अपनी स्वर्गीय सेना को बाबुल नगर के विरुद्ध युद्ध करने, और उसके निवासियों को पृथ्वी भर में फैला देने के लिए बुलाया था।

एक और तरीका जिसमें मूसा ने बाबुल के निवासियों के दृष्टिकोण और अपने दृष्टिकोण के बीच के अंतर को प्रकट किया, वह नगर और उसके गुम्मट के आकार के संबंध में था। उत्पत्ति 11:4 के अनुसार, बाबुल के निवासी ऐसा गुम्मट चाहते थे जो स्वर्ग से बाते करे, उनके देवताओं के स्थान तक। लेकिन मूसा ने इस विचार का मजाक बनाया। इसके बजाय, उसने उत्पत्ति 11:5 में लिखा कि :

> जब लोग नगर और गुम्मट बनाने लगे, तब उन्हें देखने के लिये यहोवा उतर आया। (उत्पत्ति 11:5)

इब्रानी शब्द यारद (יָרַד), जिसका अनुवाद यहां पर "उतर आया" किया गया है, उसका इस कहानी में एक विशेष अर्थ है। परमेश्वर ने नगर को सिर्फ देखा ही नहीं था; इसके बजाय, जबकि बाबुल के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

निवासी ऐसी मीनार या गुम्मट बनाना चाहते थे जो स्वर्ग तक पहुँचे, मूसा ने जोर देकर कहा कि यहोवा को सिर्फ नगर को देखने के लिए स्वर्ग की ऊंचाईयों से नीचे उतरना पड़ा। इस तरह हम देखते हैं कि मूसा ने बाबुल के निवासियों के पाखंड पर व्यंग कसा। यहोवा के दृष्टिकोण से, यह नगर एक छोटे से बिंदु से थोड़ा ही अधिक था।

अंत में, हमें ध्यान देना चाहिए कि कैसे बाबुल की हार ने मूसा को इस अति-प्राचीन नगर की प्रतिष्ठा का मजाक बनाने के लिए प्रेरित किया। नगर के निवासी इसे बाबुल कहते थे। मेसोपोटामिया की भाषाओं में, बाबुल शब्द का अर्थ है "देवता का द्वार।" इस नाम ने इस धारणा को व्यक्त किया कि उनका ज़िगुरेट वास्तव में देवताओं के लिए एक द्वार को बनाता है, और यह भी कि वे स्वर्ग की शक्तियों के द्वारा सुरक्षित थे।लेकिन नगर के नाम पर मूसा का एक अलग दृष्टिकोण था। चूंकि यहोवा ने बाबुल को बुरी तरह से हराया था, इसलिए यह नगर साफ तौर पर परमेश्वर का द्वार नहीं था। तो, फिर इस नाम का अर्थ क्या था? मूसा का व्यंग्यात्मक स्पष्ट जवाब उत्पत्ति 11:9 में प्रकट होता है:

> इस कारण उस नगर का नाम बेबीलोन पड़ा;-- क्योंकि सारी पृथ्वी की भाषा में जो गड़बड़ी है, वह यहोवा ने वहीं डाली (उत्पत्ति 11:9)

इस पद में मूसा के कटाक्ष को समझने के लिए, हमें यह समझने की जरूरत है कि उसने दो इब्रानी शब्दों की आवाज़ के साथ किस तरह खेल रचा। पहले उसने कहा, "इसीलिए उसे बाबेल कहा गया था।" "बाबुल" के लिए इब्रानी शब्द सिर्फ बाबेल (בָּבֶל) है, जो कि मेसोपोटामिया के लोगों द्वारा कहे जाने वाले उस स्थान के नाम का इब्रानी संस्करण है। लेकिन फिर भी मूसा ने समझाया कि नगर का यह नाम इसलिए था क्योंकि परमेश्वर ने वहाँ पर मानव भाषा को भ्रमित किया था। जिस इब्रानी शब्द का अनुवाद "भ्रमित होना" किया गया है वह बालल (בָּלַל) है, जिसकी आवाज़ काफी हद तक इब्रानी में बाबेल के समान है जिसमें मूसा ने कटाक्ष किया था। उसने इस प्राचीन नगर का यह कहते हुए मजाक उड़ाया कि इसको बाबेल कहने का वास्तविक कारण यह था की वहाँ पर बालल या भ्रम पैदा हुआ था। इसलिए, मूसा के दृष्टिकोण से, इस स्थान का "बाबेल" नाम उचित था, इसलिए नहीं क्योंकि यह परमेश्वर का द्वार था, बल्कि इसलिए क्योंकि यह भ्रम का स्थान था, पूरे संसार के लिए भ्रम। इस कटाक्ष के द्वारा, मूसा ने बाबेल की उस भव्य प्रतिष्ठा जो उसके दिनों में थी, तिरस्कार में बदल दिया। उसने इस्राएलियों को आनंद करने और हँसने का कारण दिया जब उसने उन्हें बताया कि उनके परमेश्वर यहोवा की जीत ने अति-प्राचीन इतिहास के महानतम नगर को एक मजाक में बदल दिया था।

नगर और यहोवा की जीत के विवरण को ध्यान में रखकर, हम इस्राएल के लोगों के लिए इस कहानी के निहितार्थ को देखने के लिए तैयार हैं जब वे प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर बढ़ रहे थे।

निहितार्थ

जैसा कि हम जानते हैं, कादेशबर्ने पर, मूसा ने कनान देश में जासूसों को भेजा था जो गलत खबर के साथ लौटे। उन्होंने दावा किया कि इस्राएल कनान देश पर विजय प्राप्त नहीं कर पायेगा क्योंकि वहाँ की सेनाएं बहुत महान थीं। इसके परिणामस्वरूप, इस्राएली लोग विजय हासिल करने से पीछे हट गए और उन्होंने अगले चालीस वर्ष जंगल में घूमते हुए व्यतीत किया। केवल तब, और जब अगली पीढ़ी वयस्क हो गई केवल तब कि मूसा एक बार फिर इस्राएल को कनान के खिलाफ खड़े करने के लिए तैयार हुआ।

कनान के बारे में मिली गलत खबरों का एक पहलू अति-प्राचीन बाबुल की पराजय के महत्व को समझने में हमारी मदद करता है। कनान के नगरों के बारे में जो जासूसों ने कहा था, जैसा कि व्यवस्थाविवरण 1:28 में बताया गया है उसे सुनिए :

वहाँ के लोग हम से बड़े और लम्बे हैं; और वहाँ के नगर बड़े बड़े हैं, और उनकी शहरपनाह आकाश से बातें करती हैं; (व्यवस्थाविवरण 1:28)

दुर्भाग्यवश, इस पद के लिए ज्यादातर आधुनिक अनुवाद कनानी नगरों के इस विवरण और बाबुल की मीनार के बीच संबंध को बनाने में असफल रहे हैं। जब जासूसों ने "शहरपनाह आकाश से बातें करती हैं" बोला, तो "आकाश" के लिए इब्रानी शब्द है शमाईम (*שָׁמַיִם*), जिसका अकसर अनुवाद "स्वर्ग" होता है। वास्तव में, यह ठीक वही शब्द है जिसका इस्तेमाल बाबुल की मीनार के लिए हुआ जब उसका विवरण उत्पत्ति 11:4 में "एक गुम्मट जिसकी चोटी आकाश से बाते करे" के रूप में होता है।" दोनों ही मामलों में, विचार यह था कि ऐसे शहर जो अजेय थे क्योंकि वे स्वर्ग की ऊँचाईयों तक पहुँचते थे।

तो यह वह तरीका है जिसमें मूसा ने बाबुल के अति-प्राचीन नगर और कनान के नगरों के बीच संबंध स्थापित किया। इस्राएलियों ने सोचा कि कनान के नगरों की शहरपनाह स्वर्ग से बातें करती थी, बहुत कुछ उन लोगों के समान जिन्होंने बाबुल की मीनार को बनाकर सोचा कि उनके ज़िगुरेट स्वर्ग तक पहुँचते थे। बाबुल के नगर और कनान के नगरों के बीच यह संबंध मूसा के उद्देश्य को प्रकाश में लाता है। साधारण शब्दों में कहें, तो भले ही कनानी नगर इस्राएल के लोगों के सामने आकाश जितने ऊँचे लगते हों, लेकिन फिर भी यहोवा की सामर्थ्य के सामने उनका कोई मेल नहीं था। अति-प्राचीन समयों में, यहोवा उस महान नगर के विरूद्ध खड़ा हुआ जो मनुष्य की दृष्टि में अति महान था तथा जिसकी मीनार के लिए यहाँ तक कहा जाता था की वे स्वर्ग से बातें करते थे। फिर भी, यह अति-प्राचीन नगर, जो कि कनान के किसी भी नगर से बड़ा था, उसको आसानी से यहोवा ने नष्ट कर दिया था।

जिस तरह परमेश्वर ने अति-प्राचीन जल प्रलय के माध्यम से मानव जाति को छुड़ाकर नई व्यवस्था में प्रवेश कराया, वैसे ही उसने इस्राएल को मिस्र से छुड़ाया था। और जैसे परमेश्वर ने शेम और कनान के बीच संघर्ष को ठहराया था, वैसे ही मूसा कनानियों के देश की ओर इस्राएल की अगवाई कर रहा था। और जिस तरह परमेश्वर ने बाबुल के महान नगर को हराया, उसी तरह वह जल्द ही इस्राएल को कनान के नगरों के खिलाफ जीत देगा। अति-प्राचीन इतिहास के इन अध्यायों से, इस्राएल के लोगों को समझ में आ गया होगा कि प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर मूसा के पीछे चलना सही दिशा में आगे बढ़ना था।

अब तक, हमने उत्पत्ति 6:9-11:9 के मूसा वाले अभिलेख की साहित्यिक संरचना और वास्तविक अर्थ को देखा है। अब हम तीसरा प्रश्न पूछने के लिए तैयार हैं: आज हमारे जीवनों में इस सामग्री को लागू करने के कुछ तरीके कौन से हैं?

वर्तमान प्रासंगिकता

अपने सामान्य तरीके से, मसीह के राज्य के तीन चरणों वाले नए नियम के विवरण का पालन करने के द्वारा हम वर्तमान प्रासंगिकता के प्रश्न को देखेंगे। हम पहले देखेंगे कि छुटकारे का जल प्रलय और उसके परिणामस्वरूप नई व्यवस्था किस प्रकार मसीह के पहले आगमन में राज्य के आरम्भ में लागू होती है। फिर कलीसिया के पूरे इतिहास में राज्य की निरंतरता के लिए इन बातों की प्रासंगिकता की ओर हम बढ़ेगें । और अंत में, हम पता लगाएंगे कि किस तरह नया नियम अति-प्राचीन इतिहास के इस भाग को राज्य की परिपूर्णता पर लागू करता है अर्थात जब मसीह महिमा में वापस लौटता है।

जब हम मूसा के अति-प्राचीन इतिहास के अंतिम अध्यायों पर इस प्रकार से आते हैं, तो हम पायेंगे कि नया नियम इस्राएल के लिए मूसा के वास्तविक उद्देश्य को मसीह के राज्य के तीन चरणों में, अतीत में, वर्तमान में और भविष्य में उसके कार्य को फैलाता है। आइए पहले उन तरीकों को देखें जिनमें नया नियम इन विषयों को मसीह के पहले आगमन के प्रकाश में देखता है।

आरम्भ

राज्य के आरम्भ में, मसीह ने उस प्रकार से अपने लोगों की तरफ से एक महान उद्धार के कार्य को पूरा किया था जो उन विषयों के समान है जिन पर मूसा ने उत्पत्ति 6:9-11:9 में जोर दिया था। हम इन संबंधों को कम से कम दो तरीकों से देख सकते हैं : उस वाचा में जिसकी मध्यस्थता मसीह ने की, और उस विजय में जिसको उसने हासिल किया था।

वाचा

एक ओर, मसीह अपने लोगों के लिए वाचा के माध्यम से छुटकारे को लेकर आया था जिसने उनको परमेश्वर के दण्ड से बचाया। जैसा कि हमने देखा, नूह ने वाचा के मध्यस्थ के रूप में एक विशेष भूमिका को अदा किया था, और मूसा जब इस्राएल के प्रति अपनी सेवकाई का वर्णन करता है तो उसने इसी तथ्य पर जोर देता है। नया नियम सिखाता है कि मसीह हमारा उद्धारकर्ता है क्योंकि जब वह इस संसार में आया तो उसने नई वाचा की मध्यस्थता की थी।

अकसर बहुत बार, मसीही लोग यह समझने में विफल हो जाते हैं कि मसीह तब इस संसार में आया जब परमेश्वर के लोग ईश्वरीय दंड के अधीन थे। क्योंकि इस्राएल ने पुराने नियम की वाचाओं का घोर उल्लंघन किया था, इसलिए सन् 586 ईसा पूर्व में बेबीलोन वासियों ने यरूशलेम को नष्ट कर दिया और इस्राएल विदेशी प्रभुत्व से पूरी रीति से कभी भी दोबारा उभर नहीं पाया। लेकिन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने भविष्यवाणी की थी कि भविष्य में नई वाचा को बाँधने के द्वारा परमेश्वर लोगों के एक समूह को छुटकारा देगा। यिर्मयाह 31:31 में परमेश्वर ने घोषित किया :

> "फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आनेवाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बाँधूँगा। (यिर्मयाह 31:31)

जैसा कि ज्यादातर मसीही लोग जानते हैं, नया नियम सिखाता है कि इस नई वाचा के मध्यस्थ के रूप में यीशु इस दुनिया में आया। यीशु ने स्वयं जब अंतिम भोज के समय अपने चेलों से बात की तो उसने अपनी इस भूमिका को स्वीकार किया था। जैसा कि हम लूका 22:20 में पढ़ते हैं, उसने उन्हें बताया:

> "यह कटोरा मेरे उस लहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है। (लूका 22:20)

इस तरह हम देखते हैं कि जिस प्रकार नूह ईश्वरीय वाचा का मध्यस्थ होने के नाते दंड से बचाया गया, उसी तरह राज्य के आरम्भ में यीशु ने नई वाचा में मध्यस्थता की और अपने लहू के माध्यम से, जो उसने ने क्रूस पर बहाया था, उन लोगों को दंड से बचाया जिन्होंने उस पर भरोसा किया था।

जीत

एक नई वाचा को लाने के अलावा, यीशु की सांसारिक सेवकाई के दौरान पवित्र युद्ध में जीत के विषय को पूरा किया। मूसा ने जल प्रलय के बाद नई व्यवस्था के भाग के रूप में पवित्र युद्ध के विषय पर ध्यान केंद्रित किया था। उसने ठहराया था कि कनान पर विजय पाने के लिए संसार की नई व्यवस्था

इस्राएल से यह अपेक्षा करती है की वह आगे बढ़ता रहे, और उसने उन्हें बड़ी जीत का आश्वासन दिया था। तुलनात्मक रूप में, पौलुस ने कुलुस्सियों 2:15 में राज्य के आरम्भ के समय मसीह की जीत का वर्णन जिस तरीके से किया उसे सुनिए :

> और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को ऊपर से उतारकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जय-जयकार की ध्वनि सुनाई। (कुलुस्सियों 2:15)

जैसा कि हम यहाँ पर देखते हैं, यीशु के पहले आगमन में उसकी जीत राजनीतिक नहीं थी, बल्कि आत्मिक थी। यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान ने उन दुष्ट शक्तियों और आत्मिक अधिकारों की हार की शुरुआत की थी जो उन दिनों में संसार के ऊपर राज कर रहे थे। उद्धार के उसके कार्य ने एक प्रकार से उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया जैसे यहोवा ने बाबुल के अति-प्राचीन नगर का उपहास किया था, और बाद में जैसे उसने कनान के बड़े नगरों को नष्ट कर दिया था।

इस अर्थ में, यीशु ने न केवल अपनी नई वाचा के द्वारा बचाने का कार्य किया, बल्कि वह अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा अंधकार की आत्मिक शक्तियों के ऊपर भी विजयी हुआ। मसीह के अनुयायी मसीह की सांसारिक सेवकाई को उस अंतिम जीत की शुरुआत के रूप में देखते हैं जिसकी प्रतिज्ञा उत्पत्ति की पुस्तक में बहुत पहले कर दी गई थी।

जैसे कि हमें उम्मीद करनी चाहिए, नया नियम उत्पत्ति 6:9-11:9 के विषयों को केवल मसीह के पहले आगमन के साथ नहीं जोड़ता। परन्तु वे राज्य की निरंतरता पर भी लागू होते हैं, वह समय जिसमें हम अभी रहते हैं।

निरंतरता

नया नियम मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच वाले समय का कम से कम उन दो तरीकों से वर्णन करता है जो मूसा के अति-प्राचीन इतिहास के अंतिम अध्यायों से संबंधित हैं। ये दृष्टिकोण प्रत्यक्ष रूप से मसीही जीवन में बपतिस्मे और आत्मिक युद्ध के महत्व से संबंधित हैं। जब हम इस युग में मसीही जीवन जीते हैं, हम लोग नूह के जल प्रलय और उसके बाद स्थापित हुई नई व्यवस्था के महत्व के संपर्क में आते हैं।

बपतिस्मा

नए नियम का एक वचन विशेष रूप से नूह के दिनों में छुटकारे के जल प्रलय के संबंध में बपतिस्मे का वर्णन करती है। प्रेरित पतरस ने जो 1 पतरस 3:20-22 में लिखा उसे सुनिए :

> जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज बन रहा था, जिसमें बैठकर थोड़े लोग अर्थात् आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए। उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; — इससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है। वह स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया; और स्वर्गदूत और अधिकारी और सामर्थी उसके अधीन किए गए हैं। (1 पतरस 3:20-22)

इस शानदार वचन में, राज्य की निरंतरता के दौरान पतरस ने हर एक व्यक्ति के उद्धार के अनुभव को नूह के दिनों के जल प्रलय से प्रत्यक्ष रूप से जोड़ा है। उसने इस बात पर ध्यान देते हुए शुरुआत की

कि नूह और उसके परिवार को पानी के द्वारा बचाया गया था। पानी के द्वारा उनके बचाव ने मानवता के लिए आशीषों से भरी एक नवीन दुनिया में प्रवेश करने का मार्ग खोला।

लेकिन यह भी ध्यान दें कि पतरस ने जल प्रलय के जल और मसीही जीवन के बीच प्रत्यक्ष संबंध को स्थापित किया। जिसमे उसने विशेष रूप से बपतिस्मे पर ध्याय केन्द्रित किया। उसने कहा कि नूह के दिनों का पानी मसीही बपतिस्मे के पानी का प्रतीक, या उसका पूर्वानुमान था। जैसा कि हमने इस पाठ में देखा है, नूह के दिनों में पानी ने संसार की भयानक भ्रष्टता को साफ किया और एक नई शुरुआत के लिए मार्ग खोला था, जैसे लाल समुद्र से होकर जाने के द्वारा इस्राएल पर से मिस्र के अत्याचार को दूर किया और इस्राएल देश के लिए नई शुरुआत हुई थी। ठीक, इसी के समान, बपतिस्मे का पानी विश्वासियों को उनके पापों से साफ करता है और मसीह में उन्हें अनंत जीवन की नई शुरुआत प्रदान करता है।

अब हमें सावधानीपूर्वक ध्यान देना चाहिए कि 1 पतरस 3:21 कहता है कि बपतिस्मा केवल इस अर्थ में ही बचाता है कि यह परमेश्वर के प्रति शुद्ध विवेक से लिया गया हो। दूसरे शब्दों में, बपतिस्मे के दौरान सिर्फ पानी से धोना किसी को नहीं बचाता है। इसके बजाय, बपतिस्मा केवल मसीह में विश्वास के द्वारा क्षमा प्राप्त करना और पाप से शुद्ध हुए हृदय की निश्चितता है, और यह उद्धार का चिन्ह या प्रतीक मात्र है। तो इस तरह से नया नियम दावे के साथ नूह के दिनों में छुटकारे के जल प्रलय को राज्य की निरंतरता पर लागू करता है कि हर बार जब कोई व्यक्ति उद्धार के लिए विश्वास के साथ मसीह के पास आता है, तो उसे बपतिस्मे के शुद्ध करने वाले जल से होकर नए जीवन में प्रवेश दिया जाता है, उसी तरह जैसे नूह को जल प्रलय से होकर नए संसार में लाया गया था।

आत्मिक युद्ध

जैसा कि हमने देखा है, फिर भी, मूसा के अति-प्राचीन इतिहास ने संकेत दिया कि नूह के दिनों के जल ने मानवता को एक पवित्र युद्ध में पहुँचाया था। मूसा ने मूल रूप से इस्राएल को इस नई व्यवस्था को स्वीकार करने और कनान की विजय के लिए आगे बढ़ते रहने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने हेतु इस तथ्य पर ध्यान दिया। ठीक इसी तरह, जब नया नियम उस आत्मिक युद्ध का वर्णन करता है जिसका सामना प्रत्येक विश्वासी करता है तो इस शिक्षा को राज्य की निरंतरता पर लागू करता है। पौलुस ने जिस तरीके से इस बात को इफिसियों 6:11-12 में कहा उसे सुनिए :

> परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको। क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। **(इफिसियों 6:11-12)**

नए नियम के कई अन्य वचन स्पष्ट रूप से सिखाते हैं कि मसीही लोग आज बुराई के विरुद्ध युद्ध में शामिल हैं। दुर्भाग्यवश, आज कई मसीही लोग अपने आत्मिक जीवनों के इस आयाम को समझने में विफल रहे हैं, बहुत कुछ मूसा के पीछे चलने वाले उन इस्राएलियों के समान है जिन्होंने कनान को अपने वश में कर लेने की परमेश्वर की आज्ञा से बचने की कोशिश की थी। लेकिन नए नियम का दृष्टिकोण एकदम स्पष्ट है। हमें इस आत्मिक युद्ध में शामिल होना चाहिए। जैसा कि पौलुस ने इफिसियों 6:13 में कहा है :

> इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको। **(इफिसियों 6:13)**

यदि हम परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लेते हैं, तो हम आत्मिक युद्ध में विजयी होंगे।

इस तरह हमने देखा कि जिस प्रकार नया नियम जल प्रलय के माध्यम से नूह के छुटकारे को और बपतिस्मे के माध्यम से हमारे छुटकारे से जोड़ता है, तो, यह भी सिखाता है कि जिस तरह अति-प्राचीन संसार को युद्ध में प्रवेश कराया गया, वैसे ही मसीही बपतिस्मा हर दिन हमें हमारे जीवन के आत्मिक युद्ध में लेकर जाता है।

परिपूर्णता

नया नियम जिस तरीके से राज्य के आरम्भ और निरंतरता में अति-प्राचीन इतिहास के अंतिम अध्यायों को लागू करता है उस प्रकाश में, यह जानने में कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी कि राज्य की परिपूर्णता को भी नूह के जल प्रलय और नए अति-प्राचीन व्यवस्था के युद्ध के संदर्भ में वर्णित किया गया है।

अंतिम प्रलय

नए नियम के लेखकों ने अंतिम प्रलय और अंतिम युद्ध के रूप में मसीह की वापसी का वर्णन करने के द्वारा इन संबंधों को दर्शाया है । 2 पतरस 3 में हम मसीह की महिमामय वापसी और नूह के अति-प्राचीन जल प्रलय के बीच एक स्पष्ट संबंध पाते हैं। जिस तरह से पतरस ने पद 3-6 में अपनी बात को शुरु किया उसे सुनिए:

> पहले यह जान लो कि अन्तिम दिनों में हँसी ठट्ठा करनेवाले आएँगे जो अपनी ही अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे। और कहेंगे, "उसके आने की प्रतिज्ञा कहाँ गई? क्योंकि जब से बापदादे सो गए हैं, सब कुछ वैसा ही है जैसा सृष्टि के आरम्भ से था?" वे तो जान बूझकर यह भूल गए कि परमेश्वर के वचन के द्वारा आकाश प्राचीन काल से विद्यमान है और पृथ्वी भी जल में से बनी और जल में स्थिर है, इसी के कारण उस युग का जगत जल में डूब कर नष्ट हो गया। (2 पतरस 3:3-6)

इस पद में पतरस ने उन हंसी-ठट्ठा करने वालों को सचेत किया जो प्रकृति की व्यवस्था की एकरूपता को प्रमाण के तौर पर इस्तेमाल करते हुए कहते थे कि यीशु वापस नहीं आएगा। उनका मानना था कि सृष्टि की रचना के समय से, सब कुछ एक समान बना हुआ है। जिस रीति से पृथ्वी को शुरुआत में परमेश्वर ने बनाया था वह उसी रीति से बनी हुई है और किसी भी चीज़ ने कभी भी पृथ्वी में कुछ बाधित नहीं किया था। और चूंकि कभी भी कुछ नहीं बदला है, उनका मानना था कि आगे भी कुछ नहीं होगा।

ऐसा नहीं है, इस बात को साबित करने के लिए पतरस ने मूसा द्वारा लिखित नूह के समय आये जल प्रलय के वृत्तांत को प्रस्तुत किया तथा उस पर जोर देने की अपील की है। आदि में परमेश्वर ने संसार को जल के माध्यम से रचा था, लेकिन नूह के दिनों में, संसार जल प्रलय के द्वारा नष्ट हुआ था। संसार के इतिहास में एक बड़ा प्रलय हुआ था। नूह के दिनों में परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया और संसार को नष्ट कर दिया था। लेकिन 2 पतरस 3:7 में पतरस के निष्कर्ष को सुनिए:

> पर वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा इसलिये रखे गए हैं कि जलाए जाएँ; और ये भक्तिहीन मनुष्यों के न्याय और नष्ट होने के दिन तक ऐसे ही रखे रहेंगे। (2 पतरस 3:7)

साधारण शब्दों में कहें, तो पतरस ने तर्क दिया कि जिस तरह जल प्रलय के द्वारा अति-प्राचीन संसार का अंत हुआ, वैसे ही वर्तमान का आकाश और पृथ्वी का भी मसीह की वापसी पर दण्ड की आज्ञा के साथ अंत हो जाएगा। यह निश्चित है कि, इस बार, दण्ड आग द्वारा आयेगा न कि पानी द्वारा,

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

लेकिन हम लोग सुनिश्चित हो सकते हैं कि जब परमेश्वर इस संसार में पाप के खिलाफ अंतिम दण्ड की आज्ञा देगा, तो यह एक बड़े वैश्विक विनाश के माध्यम से होगा, जैसा की अति-प्राचीन जल प्रलय के दौरान हुआ था।

इस तरह से, नया नियम हमारी सहायता करता है की हम नूह के जल प्रलय के संदर्भ में मसीह के द्वितीय आगमन को देख सके। नूह के दिनों में, दुष्ट लोगों को दण्डित किया गया एवं एक बड़े वैश्विक उथल-पुथल के द्वारा पृथ्वी पर से उनका नामोनिशान भी हटा दिया गया था। जब मसीह महिमा में वापस आयेगा,तब उससे भी बड़े रूप में एक प्रलय होगा जो इस संसार को जैसा कि हम इसे आज देखते है, बुरी तरह से अस्तव्यस्त कर देगा। दुष्ट लोगों को पृथ्वी पर से हटा दिया जाएगा, और जो लोग मसीह को मानते हैं उन्हें एक भव्य और अनंत नए आकाश एवं नई पृथ्वी पर पहुँचा दिया जायेगा।

अंतिम युद्ध

जैसा कि हमने देखा है, हालांकि भले ही, अति-प्राचीन इतिहास में नूह के जल प्रलय के काल में परमेश्वर के लोगों और परमेश्वर के शत्रुओं के बीच संघर्ष और युद्ध शामिल था। इस संबंध के अनुरूप, नया नियम भी मसीह की वापसी का वर्णन एक अंतिम वैश्विक युद्ध के रूप में करता है। प्रेरित युहन्ना ने जिस तरीके से प्रकाशितवाक्य 19:11-16 में मसीह की वापसी के बारे लिखा उसे सुनिए :

> फिर मैं ने स्वर्ग को खुला हुआ देखा, और देखता हूँ कि एक श्वेत घोड़ा है; और उस पर एक सवार है, जो विश्वासयोग्य और सत्य कहलाता है; और वह धर्म के साथ न्याय और युद्ध करता है। उसकी आँखें आग की ज्वाला हैं, और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं। उस पर एक नाम लिखा है, जिसे उसको छोड़ और कोई नहीं जानता। वह लहू छिड़का हुआ वस्त्र पहिने है, और उसका नाम परमेश्वर का वचन है। स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे पीछे है। जाति जाति को मारने के लिये उसके मुँह से एक चोखी तलवार निकलती है। "वह लोहे का राजदण्ड लिये हुए उन पर राज्य करेगा" और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा। उसके वस्त्र और जाँघ पर यह नाम लिखा है : "राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु।" **(प्रकाशितवाक्य 19:11-16)**

अंत समय के दर्शन की प्रभावशाली भाषा में, यूहन्ना ने घोषणा की कि मसीह का द्वितीय आगमन एक विश्वव्यापी युद्ध के सामान होगा जिसमें स्वयं मसीह प्रकट होकर अपने सभी शत्रुओं को नाश करेगा। अनंत विजय की महिमा उन लोगों की होगी जिन्होंने उद्धार के लिए मसीह पर भरोसा किया, लेकिन उन लोगों पर दण्ड और विनाश आयेगा जिन्होंने उसका तिरस्कार किया था।

इस तरह हम देखते हैं कि नया नियम मसीह के राज्य को अपनी परिपूर्णता में प्रकट होने को बुराई के ऊपर परमेश्वर की अंतिम निर्णायक जीत के अनुभव के रूप में प्रस्तुत करता है। परमेश्वर अपने सभी शत्रुओं के खिलाफ अपने राज्य को स्थापित करने लिए दृढ़ संकल्प बनाए हुए है। जब मसीह महिमा में लौटेगा, तो यह ईश्वरीय उद्देश्य पूरी रीति से पूरा हो जायेगा। दुष्ट लोगों को नष्ट कर दिया जाएगा और मसीह में परमेश्वर के लोग नए आकाश और नई पृथ्वी में अनंत जीत और शांति का आनंद लेंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उपसंहार

इस पाठ में हमने उत्पत्ति 6:9-11:9 का अध्ययन किया। पवित्र शास्त्र के इस भाग में, मूसा ने इस्राएल के लोगों का मार्गदर्शन उस सही दिशा की तरफ किया, जिस पर अगुवाई करते हुए वह उनको प्रतिज्ञा के देश में ले जा रहा था। हमने इन अध्यायों की साहित्यिक संरचना को देखा, और यह भी देखा कि कैसे मूसा ने इसकी रूप –रेखा तैयार की ताकि लोगों को प्रोत्साहित करे की वे कनान पर जीत हासिल करने लिए साहस के साथ आगे बढ़ते रहे। साथ ही साथ हमने यह भी समझने का प्रयास किया कि नया नियम इन विषयों को मसीह के राज्य के तीन चरणों पर कैसे लागू करता है।

इस पापमय संसार में जब हम मसीह के लिए जीने में संघर्षों और चुनौतियों का सामना करते हैं, तो हमें उस संदेश को अपने मन में रखना चाहिए जिसे मूसा ने बहुत पहले इस्राएल के लोगों को दिया था। मसीह में, परमेश्वर ने हमें पाप के अत्याचार से उसी रीति ही से बचाया है, जैसे उसने अति-प्राचीन संसार को नूह के द्वारा बचाया था। लेकिन जब हम उस दिन के इंतजार में इस पृथ्वी पर दिन काट रहे है जब हमें मसीह में पूर्ण विजय प्राप्त होगी, तो यह भी जान लें की उसने हमें भी ऐसे मार्ग पर रखा है जिसमें कुछ समय का संघर्ष और लड़ाई है। उस समय के आने तक, हम यह ना भूले कि जिस संसार में हम रहते हैं वह अभी तक सिद्ध नहीं है, लेकिन हम इस बात के लिए आश्वस्त हो सकते है कि इस संसार के आत्मिक युद्ध में मसीह के पीछे चलते रहना ही एक सही दिशा में आगे बढ़ना है।